सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-27 अंक-8 23 अप्रैल से 7 मई, 2012 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

एस.यू.सी.आई.(सी) स्थापना दिवस 24 अप्रैल यथोचित सम्मान के साथ मनाएं

''राजसत्ता के ढाँचे को आमूल चूल बदले बिना जब इस तरह सरकार बदली जाती है तब क्या होता है? अगर ईमानदार आदमी सरकार में आ जाएं तो इससे और भी उलझनें पैदा हो जाती हैं क्योंकि आम लोग उन पर विश्वास करते हैं। ईमानदार होने के बावजूद अगर वे भ्रमित हैं और क्रान्ति का रास्ता नहीं ले सकते हैं, तो असलियत यह है कि पूँजीपति वर्ग के पिट्ठुओं जैसा काम करने के सिवाए उनके पास कोई दूसरा कोई विकल्प नहीं होता है। यह पूँजीवादी व्यवस्था ही है जिसे उन्हें सुधारना है, और भी सुदृढ़ करना है, इसके अलावा जनता के शिकवे-शिकायतें कम से कम कुछ समय के लिए कम हो जाते हैं क्योंकि लोग उनका भरोसा करते हैं। इसीलिए ऐसे 'ईमानदार' प्रशासकों के शासनकाल में महज बुर्जुआ शासन, पूँजीवादी शासन को ही खुद को और भी सुदृढ़ करने का मौका मिल जाता है। लेनिन ने एक समय कहा था कि एक ईमानदार पादरी और एक बेईमान पादरी के बीच, बेईमान पादरी ही एक मायने में बेहतर है, इस मायने में नहीं कि वह अपनी बेईमानी की वजह से बेहतर है। वह इसलिए बेहतर है क्योंकि लोग आसानी से उसे जाँच-परख लेते हैं। लेकिन अगर एक ईमानदार और भ्रमित पादरी लोगों को यह उपदेश देता जाए कि वे इसलिए दु:ख-तकलीफ झेल रहे हैं क्योंकि उनकी किस्मत या तकदीर ही ऐसी है। उन्हें क्रान्ति के पथ से दूर रखने के उद्देश्य से यह कर रहा है तो यह काम ज्यादा नुकसान पहुँचाता है।''

-कॉमरेड शिवदास घोष

(15 अगस्त को मिली आजादी और जनमुक्ति की समस्याएं, खण्ड-3, अंग्रेजी संस्करण)

कॉमरेड कल्याण चौधरी लाल सलाम

केन्द्रीय कमेटी की श्रद्धांजलि

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य और आसाम राज्य कमेटी के सचिव आजीवन क्रान्तिकारी कॉमरेड कल्याण चाधरी की मृत्यु पर केन्द्रीय कमेटी गहरा शोक प्रकट करती है। कॉमरेड कल्याण चौधरी 1970 से क्रोनिक ऑबस्ट्रक्टिव पलमोनरी डिज़ीज़ (सीओपीडी) और जबरदस्त ब्रोन्कियल अलर्जी की बीमारी से पीड़ित थे। समय गुजरने के साथ-साथ उनकी तबीयत बिगड़ती गई और पिछले 14 साल से ये कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि वे पूरी तरह से बिस्तर पर ही थे। आखिरकार 30 मार्च को दोपहर 1 बज कर 5 मिनट पर कलकत्ता हार्ट क्लिनिक एण्ड हॉस्पीटल में उन्होंने अन्तिम सांस ली। मृत्यु के समय उनकी उम्र 69 साल थी।

1969 में अविभाजित आसाम की राजधानी शिलांग शहर में कॉलेज में गणित के तरुण प्रोफेसर कॉमरेड कल्याण चौधरी इस युग के अन्यतम श्रेष्ठ मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन के सम्पर्क में आए और उसी साल वे एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) पार्टी से जुड़ गए और शिलांग शहर व आसपास के इलाकों जहाँ मूलत: खासी और जयन्तिया समुदायों के आदिवासी लोग रहते हैं, वहाँ पार्टी का काम करने लगे। उसी समय वे सर्वसम्मति से शिलांग जिला सांगठनिक कमेटी के सचिव चुने गये। बाद में जब आसाम राज्य को विभाजित करके नया राज्य मेघालय गठित किया गया तो वहाँ पार्टी का संगठन बनाने की जिम्मेदारी उनको सौंपी गई। धीरे-धीरे जब छात्र-नौजवानों, अध्यापकों व सरकारी कर्मचारियों के बीच पार्टी के आदर्श और चिन्तन का गहरा प्रभाव पड़ने लगा, ठीक उसी समय 1979 में आसाम और मेघालय राज्य घोर उग्र क्षेत्रीयवादी-संकीर्णतावादी-साम्प्रदायिक ताकतों की मदद से भड़के भयानक दंगे-फसादों की आग में जल उठे, सैकड़ों बेकसूर लोगों की जान-माल का नुकसान हुआ। प्रबल आतंक के चलते हालात ऐसे हो गये कि मजबूर होकर वहाँ पार्टी का कामकाज वक्ती तौर पर स्थगित रखना पड़ा। उस समय गुवाहाटी में पार्टी की राज्य

(शेष पृष्ठ 2 पर)

केन्द्रीय कमेटी की श्रद्धांजलि

(पृष्ठ 1 का शेष)

कमेटी के दफ्तर को केन्द्र करके पार्टी का जो कामकाज चल रहा था, उसमें मदद करने के लिए कॉमरेड कल्याण चौधरी शिलांग से गुवाहाटी चले आएं। उन हालात में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाने से उन्हें आखिरकार आसाम राज्य कमेटी के साथ स्थायी तौर पर जोड़ने की जरूरत दिखाई दी। इसी संघर्ष की प्रक्रिया में ही वे पूर्णकालिक कार्यकर्ता बन गये। लेकिन पार्टी का कामकाज चलाने के लिए लगातार बढ़ती आर्थिक जरूरतों को पूरा करने की और भी बड़ी जिम्मेदारी निभाने के अंग के तौर पर उनको अध्यापनकार्य भी चलाते रहने को कहा गया। जिस तरह वे दिन पर दिन अपनी बुरी बीमारी की कोई परवाह न करते हुए हँसते-हँसते गुवाहाटी से 100 कि.मी. दूर शिलांग आने-जाने की बड़ी मुश्किल जिम्मेदारी निभाते रहे, वह न केवल मिसाल देने लायक है बल्कि अनुकरणीय भी है–इससे समझा जा सकता है कि क्रान्तिकारी चिन्तन के सम्पर्क में आने के शुरूआती दिनों से ही कॉमरेड शिवदास घोष की चिन्तनधारा और क्रान्तिकारी पार्टी की जरूरत की उन्होंने कितनी गहरी समझ हासिल कर ली थी। उनके 46 साल लम्बे राजनैतिक जीवन में सभी कामों में उनमें जबरदस्त उत्साह था–वह चाहे क्रान्तिकारी तत्व-सिद्धांत की चर्चा हो या खाना पकाने का ही काम हो। पूरा मन लगा कर और क्रान्तिकारी काम के साथ एकात्म होकर वे पार्टी द्वारा जो भी जिम्मेदारी सौंपी गई उसको निभाते रहे। इस मामले में कुछ भी उन्हें रोक नहीं पाता था।

शुरूआत में उन्हें सांगठनिक जिम्मेदारी देकर बाराक घाटी में भेजा गया। कॉमरेड कल्याण चौधरी के सान्निध्य में जो कोई आया, उन सभी पर उनकी निष्ठा, अदम्य साहस और विरामहीन कर्तव्य परायणता की गहरी छाप पड़ी है। ऐसे एक समर्पित क्रान्तिकारी चरित्र के सान्निध्य में जो भी आये, उन सभी में उनके प्रति पैदा हो गया गहरा प्यार और आस्था। क्रान्तिकारी उद्देश्यमुखिनता और पार्टी के प्रति जबरदस्त जिम्मेदारी के बोध से संचालित होकर वे अपने सभी सहकर्मियों के साथ एक अत्यंत घनिष्ठ सम्पर्क और एकात्मता कायम कर लेते थे। वे संयुक्त ग्वालपाड़ा जिले में संगठन बनाने के काम में जुटे। वह बहुत ही मुश्किल समय था। घोर साम्प्रदायिक संघ परिवार और उग्र प्रादेशिक ताकतों ने उस समय उस जिले में रहने वाले अल्पसंख्यक समुदायों पर नृशंस अत्याचार ढाये थे। यह कह सकते हैं कि बर्बर हत्याकाण्ड किये थे। उन हालात में भी कॉमरेड कल्याण चौधरी ने बेमिसाल साहस, सूझबूझ और क्रान्तिकारी मनन का परिचय देते हुए सारी प्रतिकूलताओं को पार करते हुए यहाँ तक कि जान की बाजी लगा कर भी पार्टी के संगठन का विस्तार किया था। गरीब, असहाय, अत्याचारित लोगों के प्रति उनका प्यार और दायित्वबोध इतना गहरा था। इसीलिए वे केवल गरीबों की गहरी श्रद्धा के पात्र ही नहीं बल्कि उनके अपने आदमी हो गये थे। वे थे उनके निहायत अजीज दोस्त, श्रद्धेय नेता। पढ़ने-लिखने के प्रति उनका प्रबल आग्रह था। वे खुद एक बड़े अच्छे लेखक और बड़े अच्छे वक्ता थे। संघर्ष के पथ पर वे समझदारी के ऐसे स्तर पर पहुँच गये थे कि मार्क्सवाद लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा की रोशनी में राजनैतिक शिक्षण शिविर और स्टडी क्लास संचालित करने का मान भी हासिल कर लिया था। गणित पर उनकी पकड़ ने द्वंद्ववाद के विज्ञान और कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन की मर्मवस्तु समझने के काम में उनकी मदद की थी। जिस पल वे क्रान्तिकारी आदर्श की मर्मवस्तु समझ लेते, तुरन्त उस आदर्श को अपने जीवन के सभी पहलुओं में लागू करने के संघर्ष में अडिग निष्ठा और फौलादी संकल्प लेकर कूद पड़ते।

यह बात अत्यंत दृढ़ता से कही जा सकती है कि रोजमर्रे के आचरण-व्यवहार और चिन्तन पद्धति से क्रान्ति के प्रति

श्रद्धांजलि देते हुए कॉ. प्रभाष घोष सहित अन्य पोलित ब्यूरो सदस्य

वफादारी और अथोरिटी के बारे में क्रान्तिकारी समझ का जो मान प्रतिफलित होता है उस मामले में उन्होंने एक अत्यंत उल्लेखनीय ऊंचा स्तर हासिल कर लिया था। इस वजह से बुनियादी कम्युनिस्ट गुण हासिल करने के संघर्ष में वे दूसरों से भी पहलकदमी करवा दे सकते थे। क्रान्तिकारी दृष्टिकोण और मनन से किसी भी विषय को समझने और व्याख्या करने की क्षमता उनकी बड़ी जबरदस्त थी। वे नरम स्वभाव के आदमी थे, उनकी क्रान्तिकारी चेतना ने उनको बड़ी आसानी से लेनिन द्वारा वर्णित विनम्र क्रान्तिकारी नेता बना दिया था।

जानलेवा बीमारी की असहनीय पीड़ा की जरा भी परवाह न करते हुए कॉमरेड कल्याण चौधरी एक असाधारण संघर्ष कर गये और ज्यादातर समय बिस्तर पर रहते हुए भी पिछले 14 साल से आसाम राज्य कमेटी के सचिव की बड़ी भारी जिम्मेदारी निभाने की शानदार मिसाल पेश कर गये, उनके प्रति क्रान्तिकारी श्रद्धांजलि देते समय केन्द्रीय कमेटी इस बात पर गौर किये बिना नहीं रह सकती। उनके ये उन्नत गुण खासकर पार्टी, वर्ग और क्रान्ति के साथ एकात्म हो जाने के लक्ष्य से जीवन के तमाम पहलुओं में व्याप्त कर उन्होंने जो संघर्ष चलाया, उसकी स्वीकृति में पहली पार्टी कांग्रेस की पूर्व वेला में उन्हें स्टाफ सदस्यता प्रदान की गई और बाद में वे पार्टी के कन्ट्रोल कमिशन के सदस्य बने। स्वाभाविक है कि उन जैसे एक ऊंचे दर्जे के मूल्यवान क्रान्तिकारी नेता के देहान्त से एक शून्यता पैदा हो गई है। उनकी जिन्दगी के लम्हें अगर और लम्बे हो गये होते तो वे क्रान्तिकारी आन्दोलन खड़ा करने के क्षेत्र में और भी उल्लेखनीय योगदान दे गये होते। केन्द्रीय कमेटी अत्यंत दृढ़ता के साथ विश्वास करती है कि जो मिसाल देने लायक संघर्ष वे कर गये हैं, जो साफ छाप उन्होंने डाली है और जो विरासत वे छोड़ गये हैं, उससे तमाम पार्टी कॉमरेड–जिन्हें उन्होंने अपने हाथों से तैयार किया है, बड़े जतन से पाला-पोसा है, आँसुओं से जिनकी आँखें आज भर आई हैं, जो आज इस भारी नुकसान की घड़ी में पल भर के लिए बेबस महसूस कर रहे हैं, वे सभी फिर उठ खड़े होकर मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा के परचम को फहरायेंगे–जो परचम कॉमरेड कल्याण चौधरी जीवन भर उठा कर चले थे।

इस निडर आजीवन क्रान्तिकारी योद्धा और इस युग के अन्यतम श्रेष्ठ मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष के एक वफादार, जोशीले छात्र के प्रति केन्द्रीय कमेटी हार्दिक क्रान्तिकारी श्रद्धांजलि देती है।

समाजवादी क्रान्ति जिन्दाबाद
एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) जिन्दाबाद
कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम
कॉमरेड कल्याण चौधरी लाल सलाम

कॉमरेड कल्याण चौधरी की अन्तिम यात्रा

30 और 31 मार्च को कलकत्ता में संरक्षण केन्द्र में रखने के बाद दिवंगत कॉमरेड कल्याण चौधरी की मृत देह को लेनिन सरणी स्थित केन्द्रीय कार्यालय में कलकत्ता लाया गया। बाद में वहाँ से ही कॉमरेड असित भट्टाचार्य और आसाम राज्य सचिव मण्डल की सदस्या कॉमरेड चन्द्रलेखा दास उनके शव को लेकर हवाई जहाज से गुवाहाटी के लिए रवाना हुए। 1 अप्रैल की सुबह 6 बजे से पहले 48 लेनिन सरणी के सामने की सड़क पर लोगों का ताँता लग गया। पार्टी के नेता, कार्यकर्ता, शुभचिन्तक आ पहुँचे थे कॉमरेड कल्याण चौधरी के अन्तिम दर्शन करने के लिए। उनको श्रद्धांजलि देने आये थे पार्टी के विभिन्न जन संगठनों के नेता-कार्यकर्ता। केन्द्रीय कार्यालय के हाल में लिटा कर रखा गया था लाल झण्डे में लिपटा हुआ कॉमरेड कल्याण चौधरी का शव। वहाँ पार्टी के महासचिव सहित पार्टी के केन्द्रीय नेताओं ने माल्यार्पण करके क्रान्तिकारी श्रद्धांजलि अर्पित की। उसके बाद सजल नेत्रों से लाइन में एक के बाद एक आकर वहाँ मौजूद सभी लोगों ने श्रद्धांजलि दी। विभिन्न जन संगठनों की तरफ से माल्यार्पण किया गया। महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गीत और अन्तर्राष्ट्रीय गान गाकर केन्द्रीय कार्यालय में माल्यार्पण का दौर खत्म हुआ। गुवाहाटी हवाई अड्डे पर इन्तजार कर रहे थे कॉमरेड्स विमल नंदी, कान्तिमय देव, जयनल अबेदीन, अजहर हुसैन, सूरतजामान मण्डल आदि आसाम राज्य कमेटी के सदस्य और स्वयंसेवक। राज्य भर से दूर दराज के जिलों से सारी रात रेल व बसों में सफर करके सवेरे से ही

श्रद्धांजलि देते हुए आसाम राज्य कमेटी सदस्य

गुवाहाटी के पार्टी कार्यालय में आने शुरू हो गये थे कार्यकर्ता, समर्थक हमदर्द। दिन ज्यों-ज्यों गुजरता गया त्यों-त्यों बढ़ती गई शोकाकुल लोगों की भीड़। भारी दिल से और आँखों में आँसू लिए बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे सैकड़ों कार्यकर्ता, समर्थक, कॉमरेड चौधरी के गुणों की

(शेष पृष्ठ 7 पर)

मार्क्सवाद ने दिखा दिया है कि इतिहास के अटल नियम से ही पूँजीवाद खत्म होगा

पार्लियामेण्ट स्ट्रीट की विशाल सभा में कॉमरेड प्रभाष घोष

(14 मार्च को दिल्ली की सभा में कॉमरेड प्रभाष घोष के अंग्रेजी में दिए गए भाषण का अनुवाद प्रकाशित किया गया है। अनुवाद की त्रुटि-कमी की जिम्मेदारी सर्वहारा दृष्टिकोण के सम्पादक मण्डल की होगी।)

आज 14 मार्च है, 170 साल पहले इसी दिन मानव इतिहास में सर्वकाल के सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक और चिन्तनकार कार्ल मार्क्स ने अन्तिम सांस ली थी, उनके चिन्तन करने की शक्ति ने काम करना बन्द कर दिया था। लेकिन इतिहास में उनका नाम एक ऐसे दार्शनिक के रूप में चिरस्मरणीय बना रहेगा जिन्होंने सबसे पहले जनता को शोषण से मुक्ति का, वर्ग शोषण के खात्मे के जरिए मानव द्वारा मानव का शोषण सदा-सदा के लिए खत्म करने का रास्ता दिखाया था।

सुदूर अतीत में उस दास युग के समय से ही शोषित-पीड़ित लोगों ने मुक्ति की चाह से बार बार बगावतें की थी। इसके नतीजतन सामाजिक व्यवस्था के क्रान्तिकारी परिवर्तन भी हुए। लेकिन मानव द्वारा मानव के शोषण का खात्मा नही हुआ। एक तरह की शोषणमूलक व्यवस्था के बदले दूसरे तरह की शोषणमूलक व्यवस्था कायम हुई। उस समय यह प्रचार व्यापक तौर पर चलाया गया कि मानव समाज का यह वर्ग-विभाजन शाश्वत बात है, इसे उलटना बिल्कुल सम्भव नहीं है। धर्म विश्वासी लोग और धर्म-प्रचारक कहा करते थे कि अमीर-गरीब, शोषक-शोषित का फर्क भगवान का पैदा किया हुआ है। यहाँ तक कि बुर्जुआ दार्शनिक भी इस बात का प्रचार करते रहते थे कि पूँजी और श्रम, पूँजीपति वर्ग और मजदूर वर्ग सदा सहअस्तित्व में रहेंगे और उत्पादन की जरूरत से यह सहअस्तित्व बनाये रखना ही पड़ेगा। पूँजीपति जायज मुनाफा कमाएंगे और मजदूर भी जायज मजदूरी पाएंगे। एक दूसरे की मदद करने के जरिए ये दोनों वर्ग साथ-साथ टिके रहेंगे। मान लिया गया था कि वर्ग शोषण और वर्ग विषमता का खात्मा किसी दिन भी नहीं होगा।

मार्क्सवाद है मानवजाति द्वारा सर्जित समस्त ज्ञान का योगफल

मार्क्स ने कहा, ''अब तक दार्शनिकों ने तरह-तरह से दुनिया की व्याख्या की है; जरूरत है दुनिया को बदलने की।'' उनके पूर्ववर्ती दार्शनिक दुनिया की व्याख्या करने के क्षेत्र में अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण, व्यक्तिगत विचार पद्धति पर निर्भर करते थे। फलस्वरूप, उनके सिद्धान्त-तत्व वास्तव में साकार नहीं हो सकते, वे लाजिमी तौर पर मनगढ़न्त हैं, भाववाद के आधार पर रचित हैं। मार्क्स पूरी तरह से अलग तरह का एक नया दर्शन-आधुनिक विज्ञान, सत्य निरूपण का सही विज्ञानसम्मत दृष्टिकोण और सही पद्धति पर रचित एक समग्र विश्वदृष्टिकोण लाये जिसका नाम है द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद। अपने पूर्ववर्ती दार्शनिकों और चिन्तनकारों के योग्य उत्तराधिकारी होने के नाते निश्चय ही उनको प्राप्य मर्यादा देना मार्क्स भूले नहीं। इसी वजह से कॉमरेड लेनिन ने कहा था कि साम्यवाद की धारणा, मार्क्सवाद की चिन्तनधारा है मानवजाति द्वारा सर्जित समस्त ज्ञान का योगफल, उसकी चरम परिणति। मार्क्स ने दिखाया कि प्रकृति में जो कुछ घटित होता है, वह सब नियम द्वारा नियन्त्रित है। प्रकृति, वस्तुजगत परिवर्तनशील है, प्रत्येक वस्तुकण गतिशील है। गतिशीलता उसकी अपनी विशेषता है और परिवर्तन की पद्धति कुछ सुनिश्चित नियमों द्वारा नियन्त्रित होती है। इसी तरह, सामाजिक परिवर्तन, ऐतिहासिक परिवर्तन - इनमें से कोई भी परिवर्तन अचानक विश्रृंखलित ढंग से नहीं होता है। किसी व्यक्तिविशेष की इच्छा-अनिच्छा पर तो निर्भर करता ही नहीं है। कुछ निश्चित नियम ही सामाजिक और ऐतिहासिक परिवर्तनों को नियन्त्रित करते हैं। विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में आविष्कृत वस्तुजगत के विशेष विशेष क्षेत्र के नियन्त्रणकारी विशेष सूत्रों को विज्ञानसम्मत ढंग से एकत्रित, संयोजित और सामान्यीकृत करके मार्क्स ने समूचे विश्व को नियन्त्रण करने वाले आम सूत्र आविष्कृत किए। वस्तुजगत के विकास का नियम आविष्कृत करते हुए उन्होंने दिखाया था कि विकास के इन विज्ञानसम्मत आम नियमों को सामाजिक परिवर्तन और विकास के छिपे नियमों को विश्लेषण करने, समझने और फैसले पर पहुँचने में कैसे इस्तेमाल किया जाए।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी वैज्ञानिक दर्शन की रोशनी में उन्होंने दिखाया कि इतिहास के अटल नियम से पूर्ववर्ती सभी सामाजिक व्यवस्थाओं की तरह ही पूँजीवाद, जो उत्पादन के विकास के एक खास दौर में आया है, वह समाज की लगाातर बढ़ती जरूरतों को पूरा करने में असमर्थ होकर उत्पादन के एक दूसरे स्तर में पहुँच जाने को बाध्य है। एक समाज के उत्पादन सम्बन्ध जब उत्पादिका शक्तियों के विकास के रास्ते में बाधा बनकर खड़े हो जाते हैं, तब दोनों के बीच का विरोधात्मक द्वन्द्व एक नए उत्पादन सम्बन्ध को जन्म देता है। यानी समाज का क्रान्तिकारी रूपान्तरण कर डालता है। इतिहास के इस नियम में ही निहित है अन्ततः पूँजीवाद के पतन और समाजवाद के उत्थान की निश्चयता। वर्तमान मरणासन्न पूँजीवादी समाज का ध्वंस होगा और उसकी जगह आएगा समाजवाद। मार्क्स के शब्दों में, साम्यवाद में कदम रखने के अन्तःवर्ती दौर के तौर पर समाजवाद कायम होगा।

यह कोई हवाई कल्पना नहीं है। समाज का यह गतिपथ मार्क्स ने नहीं खोजा। सामाजिक रूपान्तरण और प्रगति का यही है इतिहास द्वारा निर्धारित पथ। एकमात्र द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के सहारे ही इस वस्तुजगत के विकास के अन्तर्निहित नियम को समझना सम्भव है। इसीलिए लेनिन से लेकर स्टालिन, माओ त्से-तुंग, शिवदास घोष तक सर्वहारा के सभी महान नेताओं ने ठोस परिस्थिति का ठोस विश्लेषण करने के लिए द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विज्ञान पर निर्भर किया है और उसी प्रक्रिया में सर्वहारा के मुक्ति-संघर्ष को रास्ता दिखाने के उद्देश्य से इस दर्शन को और भी विकसित, विस्तृत और समृद्ध किया है। मार्क्सवाद अथवा द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विज्ञान की सही समझ से अभिप्राय है समसामयिक घटनाओं और बदली हुई परिस्थितियों के आधार पर बनी समझ, सुनिश्चित विकसित समझ। द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विज्ञानसम्मत पद्धति का अनुसरण कर मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सृजनात्मक प्रयोग की प्रक्रिया में कॉमरेड शिवदास घोष ने ही भारत की विशेष परिस्थितियों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद की समझ को एक नए स्तर तक उन्नत किया है। इसीलिए हम कहते हैं, मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष की चिन्तनधारा हमारा वैचारिक हथियार है।

आज 14 मार्च 2012 है। लाख से अधिक मेहनतकश लोग समाज के हर तबके से—मजदूर, किसान, छात्र, नौजवान, नर-नारी, सभी हिस्सों से आज 8 सूत्री मांगपत्र के आधार पर यहाँ इकट्ठे हुए हैं। अपने जीवन की ज्वलन्त समस्याओं से निजात पाना ही इस माँगपत्र की मर्मवस्तु है। इन माँगों को लेकर वे लगातार संघर्षरत हैं। 3 करोड़ 57 लाख से भी ज्यादा लोगों ने अत्यन्त महत्वपूर्ण इन माँगों के समर्थन में अपने हस्ताक्षर किए हैं। हम पिछले दो महीनों से संग्रह किए गए जन हस्ताक्षर लेकर यहाँ आए हैं— यह जन हस्ताक्षर संग्रह अभियान एक नए रूप में दिखाई दिया। सभी बाधा-विपत्तियों, प्रतिकूलताओं का मुकाबला करते हुए असुविधाओं को पार करके देश के हर कोने के मेहनतकश लोग अप्रतिरोध्य ज्वार की तरह आज इस जन समुद्र में शामिल हुए हैं। जबकि, किसी अखबार या टी.वी. चैनल ने देश

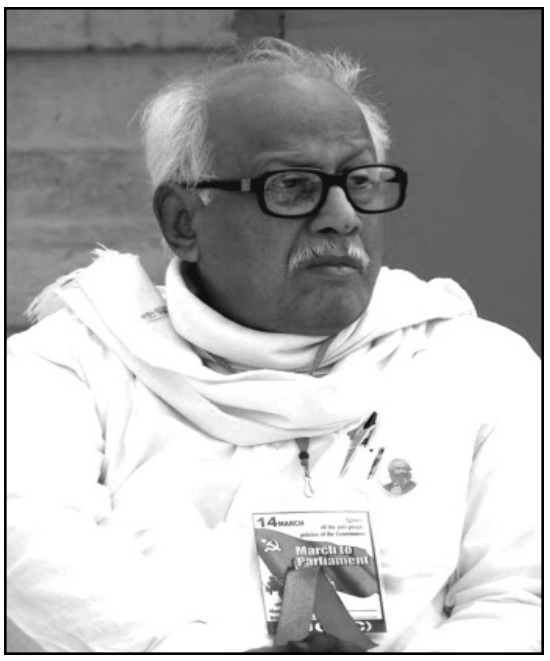

में कहीं भी, किसी भी जगह जायज माँगों को लेकर जनता के इस आन्दोलन की तैयारी और आज की इस विशाल रैली की खबर का प्रचार नहीं किया। हम जानते हैं कि मार्क्स के समय में भी शासक बुर्जुआ वर्ग ने मार्क्स के नाम और उनकी शिक्षाओं को जनसाधारण से छिपाकर रखने की साजिश रची थी, ताकि मार्क्स अपरिचित रह जाएं। कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन को, उनके द्वारा स्थापित पार्टी एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के नाम को ब्लैक आडट करने के लिए इसी तरह की साजिश आज जारी है। लेकिन हमारी अग्रगति को कोई रोक नहीं पाएगा। आज इस जनसमुद्र की ओर एक बार नजर पसार कर देखिए। मीडिया के किसी प्रचार के बिना ही आज वे लहरों की तरह यहाँ आकर जमा हुए हैं। सच्चाई की ताकत, सच्चाई पर खड़ी साम्यवादी विचारधारा की ताकत अपराजेय है। कोई उसकी अग्रयात्रा को रोक नहीं सकता है।

सामाजिक नियम से ही पूँजीवाद का नाश होगा

कॉमरेडो, आज केवल हमारे देश में ही नहीं बल्कि सारी दुनिया भर में एक घोर संकट से हम रूबरू हैं। यहाँ पूँजीवाद के परिणाम के बारे में मार्क्स का विश्लेषण याद करने लायक है। 18वीं और 19वीं सदी में पूँजीवाद जब विकासशील था, आगे बढ़ रहा था, सामन्ती बंधनों को तोड़कर यूरोप भर में जब औद्योगिकीकरण की आंधी चल रही थी, यह बात उस समय कोई सोच भी नहीं सकता था कि पूँजीवाद या बाजार अर्थव्यवस्था संकट के भंवर में पड़ जाएगी। मन्दी, छंटनी, बाजार संकट ये सब शब्द तब अनजाने थे। उस समय वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर महान चिन्तनकार कार्ल मार्क्स ने दिखाया कि सामाजिक नियम के अनुसार एक दिन आएगा जब यही पूँजीवाद मौत के मुँह में चला जाएगा। यह ऐतिहासिक तौर पर अनिवार्य था। पूँजीवाद लगातार एक संकट से दूसरे संकट में फंसता जाएगा। पूँजीपतियों की कब्र खुदेगी। कौन खोदेगा वह कब्र? मजदूर वर्ग। पूँजीवाद ने मजदूर वर्ग को पैदा किया है और एक दिन यह मजदूर वर्ग ही पूँजीवाद की कब्र खोदेगा। इस काम को करने के लिए मजदूर वर्ग के हाथों में अवश्य ही एक वैचारिक, सांस्कृतिक और सांगठनिक औजार रहना चाहिए।

हमारे देश में बुर्जुआ मीडिया और बुर्जुआ वर्ग के ताबेदार राजनैतिक नेता एक सुर में लगातार यह प्रचार कर रहे हैं कि देश की तरक्की हो रही है, देश तेज रफ्तार से आगे बढ़ता जा रहा है। लेकिन असल में हकीकत बिल्कुल अलग है। हमारे देश में आबादी का दो-तिहाई हिस्सा आज बेरोजगार, अर्धबेरोजगार है। 75 प्रतिशत लोग रोजाना 20 रुपए से ज्यादा खर्च नहीं कर

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण

(पृष्ठ 3 का शेष)

पाते हैं। यह है कठोर वास्तविकता। लेकिन देखिए, भारत का चोटी का उद्योगपति एशिया में सबसे अमीर व्यक्ति घोषित होने पर मीडिया इस खबर को लेकर खुशी जाहिर करता है। जब खबर आई कि दुनिया के दस सबसे अमीरों में पाँच भारतीय हैं, तो अखबारों में क्या आनन्द छा गया था! भारत के 63 परिवार 25 लाख करोड़ रुपए के मालिक हैं। यह सब खबरें मीडिया में खूब पाई जाती हैं। पार्लियामेण्ट के ज्यादातर सदस्य अरबपति हैं। ये ही हैं जनता के प्रतिनिधि! ये जहाँ सौ-सौ करोड़ रुपए घरों में भर लेते हैं वहीं देश के लाखों लाख कंगाल आम लोगों को खाने को नहीं मिलता है। लाखों किसान-मजदूर आत्महत्या कर रहे हैं। शाम का अन्धेरा जब घिर आता है, तब अपनी देह बेचने के लिए हमारी लाखों माँ-बहनें, हमारी कन्याएं बाजार में, गलियों के नुक्कड़-नुक्कड़ पर खड़ी होती हैं। नारियों की खरीद-फरोख्त ने एक भयंकर रूप ले लिया है। कितने लाख बच्चे सड़कों पर पैदा होते हैं, सड़कों पर ही मर जाते हैं कौन उनकी खोज-खबर रखता है। हमारे देश के श्रद्धेय स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी जान दी थी, देश के लिए गोलियों का सामना किया था। उन्होंने क्या कभी सपने में भी सोचा था कि आजाद भारत का यह चेहरा होगा? लेकिन यही है देश का असली चेहरा। कई करोड़ मजदूरों की छंटनी हो गई है। दुनिया की तस्वीर भी कोई अलहदा नहीं है। दूसरे विश्व युद्ध के बाद से ही अमेरिका आर्थिक पहलू से इतना ताकतवर बनकर उभरा था कि 'डॉलर साम्राज्य' नामक एक शब्द चालू हो गया था। अमेरिकी डॉलर ने यूरोप, जापान समेत सारे एशिया को अपनी गिरफ्त में ले लिया था। युद्ध से तबाह यूरोप की मार्शल प्लान के जरिए अमेरिका ने धड़ाधड़ कर्ज दिया था, उनके बाजार पर कब्जा कर लिया था। वहीं अमेरिका आज प्रशांत महासागर में डूबता जा रहा है। एक समय अमेरिका सबसे बड़ा कर्जदाता देश था। अब यह सबसे कर्जवान देश में तब्दील हो गया है। कर्ज लिए बिना, बाजार से उधार लिए बिना अमेरिकी अर्थव्यवस्था अब और बच नहीं सकती है। बाकी छोटी-बड़ी पूँजीवादी-साम्राज्यवादी अर्थव्यवस्थाओं का भी यही हाल है। पूरा यूरोप आज संकट में डुबकी खा रहा है। यूरोप के काफी सारे देश सर्वात्मक कर्ज संकट में फंसकर पूरी तरह दिवालिया हो गए हैं। किसी भी टोटकेबाजी और नीम हकीमी से पूँजीवाद अपने अनिवार्य पतन से बच नहीं सकता - इस बात की मार्क्स ने भविष्यवाणी कर दी थी। बुर्जुआ बाजार अर्थव्यवस्था आज बाजार संकट से चरमरा रही है। इस बाजार का मतलब क्या है? यहाँ बाजार का मतलब है माल का खरीदार, माल कौन खरीद सकते हैं? वे ही लोग जिनके पास पैसा है। लेकिन लोग इतने शोषित हैं, पूँजीवादी उत्पीड़न की चक्की में इतने पिसे जा चुके हैं, उनकी आर्थिक क्षमता इतनी संकुचित हो चुकी है कि आज उनके पास और क्रय क्षमता नहीं बची है। इसीलिए पूँजीपतियों के लिए बाजार नहीं है। एक समय मांग के आधार पर अर्थव्यवस्था चलती थी, आपूर्ति थी मांग के मुताबिक। लेकिन आज अर्थव्यवस्था चल रहीं है कर्ज पर निर्भर रहकर। रुपया उधार देकर कृत्रिम ढंग से क्रय क्षमता को बढ़ाया जा रहा है। लेकिन इस तरह उदारता के साथ दोनों हाथों से कर्ज देने के संग ही बनी रहती संकट की छाया। आमदनी जब घट रही है, तब कर्ज लेने वाले कर्ज कैसे लौटा पाएंगे? यही है आज पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की तस्वीर। इसी के साथ जुड़ा हुआ है मरणासन्न पूँजीवादी व्यवस्था से उत्पन्न सर्वव्यापक भ्रष्टाचार। हमारे देश में रोजाना सुबह-सुबह अखबार का पन्ना खोलते ही एक पर एक भ्रष्टाचार की घटनाओं पर नजर पड़ेगी। मंत्री से लेकर अफसरशाह तक सभी आकण्ठ भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं। तिरंगा झण्डा फहराने वाली सब से बड़ी बुर्जुआ पार्टी कांग्रेस से लेकर बुर्जुआ वर्ग की दूसरे नम्बर की बड़ी पार्टी भगवा झण्डाधारी साम्प्रदायिक बीजेपी, साथ ही साथ सीपीएम जैसी नकली मार्क्सवादी पार्टी, सभी सिर से पाँव तक भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। राजनीति अब एक फायदेमन्द धंधे में तब्दील हो गई है। आजादी आन्दोलन के समय इस देश में राजनीति को अत्यन्त श्रद्धा-सम्मान की नजरों से देखा जाता था, एक महान काम माना जाता था। राजनीतिज्ञों को निस्वार्थ सन्यासियों जैसा सोचा-समझा जाता था। अब लोग राजनीतिज्ञों को ढोंगी-पाखण्डी मानते हैं, जो जनता को ठगते हैं, जो झूठ बोलते हैं। राजनीतिज्ञों से लोग आज नफरत करते हैं। समाज में यह अब एक स्वाभाविक सोच है कि राजनीतिज्ञ स्वार्थी, धनलोलुप होते हैं। बुर्जुआ राजनीति आज इतनी अधःपतित हो चुकी है कि लोगों को आज राजनीति से ही नफरत हो गई है। हमारी पार्टी के साथ जो लोग किसी न किसी तरह जुड़े हुए हैं और परिचित हैं, केवल वे ही जानते हैं कि धन और सत्ता की छीना झपटी में हम नहीं हैं। हम समाज में एक वैकल्पिक धारा, उन्नत क्रान्तिकारी राजनीति की धारा लेकर चल रहे हैं।

कॉरपोरेट पूँजी ही चुनावी नतीजों को नियन्त्रित और निर्धारित करती है

देश में जनतंत्र को लेकर बड़ा शोर मचा हुआ है। जबकि कहीं भी जनतंत्र का लेशमात्र भी है क्या? हर जगह जनतंत्र को दोनों पैरों तले रौंदा जा रहा है। जनतान्त्रिक अधिकारों का हनन किया जा रहा है। छीना जा रहा है। बुर्जुआ अत्याचारी शासक अपनी लचर-पचर शासन व्यवस्था को दीर्घस्थाई करने के लिए जिस किसी भी उत्पीड़न के खिलाफ जनता के हर प्रतिवाद को कुचल रहे हैं। प्रतिरोध की आवाज को दबा रहे हैं। लाठी-गोली और ऑसू गैस से जनतान्त्रिक आन्दोलनों को ध्वस्त कर रहे हैं। यहाँ तक कि शासक सभी के लिए वैज्ञानिक, धर्मनिरपेक्ष शिक्षा की माँग पर आन्दोलन को भी नहीं बख्श रहे हैं, लाठियों से पिटाई कर रहे हैं। केवल किताबों में ही मिलेंगी जनतंत्र के उन आदर्शों की बातें। बाई दि पिपल, फॉर दि पिपल एण्ड ऑफ दि पिपल–एक समय के जनतंत्र का बुलन्द नारा, स्वतंत्रता-समानता-भाईचारा के आदर्श की बातें अब केवल किताबों के पन्नों पर ही मिलती हैं। शासन व्यवस्था कैसी होगी, यह अबाध, निष्पक्ष और साफ सुथरे चुनावों के जरिए जनता ही तय करेगी–यह धारणा ही अब प्रहसन बन गई। आज का जनतंत्र हो गया है बाई दि एक्सप्लायटर, फॉर दि एक्सप्लायटर एण्ड ऑफ दि एक्सप्लायटर। सारी की सारी मुख्य राजनैतिक पार्टियाँ, वह चाहे कांग्रेस हो, बीजेपी हो, सीपीएम हो और विभिन्न क्षेत्रीय पार्टियाँ हों, वे सभी आज रजिस्टर्ड कन्ट्रक्टरों की तरह शासक पूँजीपति वर्ग की रजिस्टर्ड पालिटीकल मैनेजर हैं। उद्योगपति जिस तरह अपने कारखाने या कारोबार को चलाने के लिए मैनेजर रखते हैं, उसी तरह सरकार चलाने के लिए उन्हें एक राजनैतिक मैनेजर चाहिए। चुनाव का अर्थ हो गया है औद्योगिक लॉबियों का आशिर्वाद पाकर कौन सरकार में बैठेगा और कौन विपक्ष में रहेगा, यह तय करना। धन के बल पर कॉरपोरेट पूँजी ही अब चुनावी नतीजों को कार्यतः नियन्त्रित और निर्धारित करती है। अब सब कुछ को नियन्त्रित करता है धन बल, प्रशासनिक बल, बाहु बल और प्रचार बल। कौन कितनी चमक दमक पैदा कर सकता है, कितनी चकाचौंध पैदा कर सकता है यही हो गई है चुनावों में बुर्जुआ राजनैतिक पार्टियों की भूमिका। वोट बटोरने के लिए वोटबाज पार्टियाँ किसी भी स्तर तक नीचे गिर सकती हैं। यहाँ तक कि सीपीआई(एम) जैसी पार्टियाँ, जो गत विधान सभा चुनावों में केरल और पश्चिम बंगाल में परास्त हुई हैं, उन्होंने इस बार केरल और पश्चिम बंगाल में अपनी पार्टी के राज्य सम्मेलनों में ईसा मसीह और विवेकानन्द का आशीर्वाद माँगा था। हालाँकि यह भी उन्होंने वोट बटोरने का लक्ष्य सामने रख कर ही किया था। यह है उनकी धर्मनिरपेक्षता का ब्राण्ड या नमूना, मार्क्सवाद तो दूर की बात रही।

कॉमरेडो, एक और महत्वपूर्ण विषय पर मैं बोलूँगा। हमारे दिवंगत नेता कॉमरेड शिवदास घोष ने एक समय कहा था कि एक राष्ट्र अधभूखा, अधनंगा रह कर भी, प्रबल अत्याचारित होने पर भी सीना तान कर उठ खड़ा हो सकता है, अगर नैतिक बल अटूट रहे। कोई आदमी भूखे रह कर भी लड़ सकता है, बशर्ते कि उसका नैतिक मेरूदण्ड अटूट हो, बशर्ते कि वह क्रान्तिकारी विचारधारा और उन्नत नैतिकता से लैस हो। लेकिन आज सबसे बड़ा हमला संस्कृति और चरित्र पर, नीति-नैतिकता पर आ गया है। हमारे देश ने एक समय चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सूर्यसेन, खुदीराम बोस, प्रीतिलता, अश्फाक उल्ला खाँ और दूसरे-दूसरे शहीद पैदा किए थे। भारतीय नवजागरण और आजादी आन्दोलन के सुनहरे काल में और भी कई महान हस्तियाँ देखी गई थी, जिनके स्पर्श से युवा शक्ति को नया तेज प्राप्त हुआ था, हजारों हजार छात्र-नौजवानों ने घर-बार छोड़ कर आजादी आन्दोलन में कूदकर हँसते-हँसते फाँसी के फन्दे को गले लगाया था, गोलियों के सामने सीने तान दिए थे उन्होंने क्या ऐसे एक आजाद भारत की बात सोची थी, जिसमें छात्र-नौजवान शराब, ड्रग, अश्लील फिल्मों, पोर्नोग्राफी के आदी हों जाएंगे, यौन दास बनकर रह जाएंगे? क्या उन्होंने सोचा था कि दिल्ली, कलकत्ता सहित देश के दूसरे-दूसरे शहरों की सड़कों पर लड़कियाँ सुरक्षित चल फिर नहीं सकेंगी। रोजाना इस देश में सैकड़ों बलात्कार और सामूहिक बलात्कार होंगे? हमारे देश के छात्र-नौजवानों का अतीत के सुनहरे युग से नाता टूट गया है। यह सब बातें आज के छात्र-नौजवान भूल गए हैं कि देश की आजादी के लिए उनके पूर्वजों ने वीरों की तरह लड़ाई लड़ी थी और उससे चरित्र का उन्नत गुण और उन्नत मनन हासिल किया था। इसका कारण दिखाते हुए कि आज की परिस्थिति बिल्कुल भिन्न है, कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था कि आजाद देश के शासक जन-प्रतिवाद, आन्दोलन, संघर्ष और क्रान्ति से भयभीत हैं। इसीलिए वे चाहते हैं कि छात्र-नौजवान सांस्कृतिक अद्यःपतन के निकृष्ट शिकार हो जाएं, अन्दर से वे पंगु हो जाएं, मानवीय गुणों को खो दें, इसकी जगह खुदगर्जी और मनुष्यत्वहीनता लेकर चलें। वरना, छात्र-नौजवान अगर महान स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन और शिक्षाओं की तहेदिल से चर्चा करें, उससे शिक्षा लें और उनकी संस्कृति के सुर को अपना लें तो वे आज के इस सर्वव्याप्त अन्याय, छल-कपट और वंचना के खिलाफ प्रतिवाद में कूद पड़ेंगे। यह एक खतरनाक साजिश है। यहाँ तक कि परिवारों को ही देख लीजिए–कहीं सुख-चैन नहीं है, स्नेह-प्रेम-ममता नहीं है, एक-दूसरे के प्रति सहानुभुति नहीं है। बूढ़े माँ-बाप को औलाद घर से बाहर निकाल देती है, पति पत्नी की हत्या कर देता है। यहाँ तक कि बच्चों की भी कोई देखभाल नहीं करता है। घटिया व्यक्तिगत स्वार्थ पारिवारिक दायित्वबोध तक को अस्वीकार कर रहा है। यह है आधुनिक सभ्यता का चेहरा। यह है आधुनिक पूँजीवाद की देन। नतीजतन, सभ्यता मर रही है। सर्वत्र मरणासन्न पूँजीवाद के सड़ते घावों से मवाद रिस रही है। जब तक पूँजीवाद को कब्र में नहीं धकेल दिया जाएगा तब तक यह समस्या, यह संकट चलता रहेगा और लगातार बढ़ता जाएगा।

आन्दोलन में सही विचारधारा और सही नेतृत्व का प्रश्न होता है सबसे महत्वपूर्ण

जैसे अत्याचार और शोषण है, वैसे ही है प्रतिवाद और संघर्ष। अतीत में कई आन्दोलन, कई संघर्ष हुए हैं। आज भी लोग प्रतिवाद में सड़कों पर उतर रहे हैं। लेकिन आन्दोलन सफल अंजाम पर नहीं पहुँच पा रहा है। हमारे देश में गौरवशाली आजादी आन्दोलन का दुखदायी अंजाम हुआ। लेकिन क्यों हुआ? क्योंकि एक आन्दोलन को सफल करने के लिए विचारधारा और नेतृत्व का

(शेष पृष्ठ 5 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण

(पृष्ठ 4 का शेष)

प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण होता है। आजादी के बाद भी हमारे देश में आन्दोलन कोई कम नहीं हुए हैं। आज सभापति ने जैसे थोड़ी देर पहले ही इस नई दिल्ली में अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार-विरोधी आन्दोलन की बात रखी है। लेकिन थोड़े दिनों में ही उसकी हवा निकल गई। इसीलिए कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था कि लोगों में लगातार जमा रोष-आक्रोश से वे स्वत:स्फूर्त आन्दोलन में तो उतर पड़ेंगे। लेकिन सही नेतृत्व का अगर अभाव रहा, जरूरी औजार नहीं रहा तो आन्दोलन और संघर्ष कामयाबी की मंजिल तक नहीं पहुँच पाएगा। पिछले साल के आखरी दौर में हमने अरब मुल्कों और अफ्रीकी मुल्कों में देखा कि किस तरह उन सब मुल्कों की जनता अत्याचारी शासकों के खिलाफ स्वत:स्फूर्त आन्दोलन में कूद पड़ी थी। इन आन्दोलनों को कहा गया था अरबी बसन्त। लेकिन देखा गया कि आन्दोलन आखिरकार जनजीवन में बसन्त की बहार लाने की बजाए कड़कड़ाती सर्दी लाया। क्योंकि एक स्वेच्छाचारी शासक के बदले दूसरा कोई स्वेच्छाचारी शासक आकर सत्ता पर बैठ गया। यह केवल हुकूमत का बदलाव था। भुक्तभोगी जनता के जीवन में किसी तरह की कोई तब्दीली नहीं आई। अमेरिका की सरजमीं पर अभूतपूर्व 'ऑक्यूपाई वॉल स्ट्रीट' आन्दोलन हुआ जिसने पूरी दुनिया में इतनी जबरदस्त हलचल मचा दी थी, उसका भी जैसा चाहा था वैसा नतीजा नहीं निकला। क्योंकि अमेरिकी साम्राज्यवाद के प्राणकेन्द्र वॉल स्ट्रीट को किस तरह ध्वस्त करना होगा और किस तरह नई सभ्यता का निर्माण करना होगा, विक्षुब्ध जनता यह नहीं जानती थी। वह चेतना उनमें नहीं थी।

इसी तरह यूनान, फ्रांस, इटली, जर्मनी, पुर्तगाल, ब्रिटेन समेत सर्वत्र देखा जा रहा है। लेकिन ये सभी छिट-पुट स्वत:स्फूर्त आन्दोलन थे। सही नेतृत्व और सही विचारधारा वहाँ नहीं है। नतीजतन, वे आन्दोलन ज्यादा आगे नहीं बढ़ पाएंगे। इसीलिए आज असली क्रान्तिकारी विचारधारा की इतनी जरूरत है। दिशा-दिशा में फूट पड़े जनआन्दोलनों को रास्ता दिखाते हुए सही लक्ष्य पर पहुँचा देना है तो मार्क्सवाद-लेनिनवाद शिवदास घोष चिन्तनधारा चाहिए। इसके बिना कोई भी आन्दोलन कामयाब नहीं हो सकता है।

सीपीआई(एम)-सीपीआई का इतिहास है लगातारमार्क्सवाद का उल्लंघन करने का इतिहास

एक और पहलू भी समझने की जरूरत है। लेनिन ने चेतावनी देते हुए कहा था कि किसी के द्वारा खुद के बारे में मार्क्सवादी होने का दावा करने से ही वह असल मार्क्सवादी नहीं हो जाता है। लेनिन ने कहा था कि मार्क्सवाद की सैद्धान्तिक जीत ने उसके दुश्मनों को भी मार्क्सवादी का छद्म भेष धारण करने को मजबूर कर दिया है। इसलिए असली मार्क्सवाद और नकली मार्क्सवाद, सच्चे मार्क्सवादियों और झूठे मार्क्सवादियों के बीच जनता को फर्क करना होगा। लेनिन ने कहा था कि बुर्जुआ वर्ग को ऐसे दलालों की जरूरत होती है जिन पर मजदूर वर्ग का एक हिस्सा विश्वास करता है, जो बुर्जुआ को उजले करके दिखा सकते हैं, सुधारवादी रास्ते की सफलता को लेकर भाषण दे सकते हैं, मीठी बोली बोलकर जनता की आँखों में धूल झोंक सकते हैं और सुधारवादी रास्ते की सम्भावना और चमत्कारिकता के रंगीन चित्र खींच कर जनता को क्रान्ति के रास्ते से परे हटा सकते हैं। रूस और यूरोप के इस तरह के झूठे मार्क्सवादियों के खिलाफ लेनिन को लड़ाई लड़नी पड़ी थी। कॉमरेड शिवदास घोष ने भी इस देश में नकली मार्क्सवादी अविभाजित सीपीआई और बाद में दोफाड़ होकर बनी सीपीआई(एम), सीपीआई के खिलाफ लड़ाई चलाई थी। अवश्य याद करने की जरूरत है कि आजादी आन्दोलन के समय महान स्टालिन के दिशा-निर्देश के मुताबिक क्रान्तिकारी पेटी-बुर्जुआ हिस्से के साथ जुड़कर एक साम्राज्यवाद-विरोधी फ्रण्ट बनाने का मौका मजदूर वर्ग के पास आया था; इसके द्वारा समझौतापरस्त राष्ट्रीय बुर्जुआ को मुख्यधारा से अलग-थलग करते हुए आजादी आन्दोलन में मजदूर वर्ग का आधिपत्य कायम करना सम्भव था। ऐसा हो गया होता तो इतिहास में एक मोड़ आ जाता। सीपीआई अगर एक सही मायने में कम्युनिस्ट पार्टी होती, तो इस तरह का साम्राज्यवाद-विरोधी जनमोर्चा बनाने के लिए सर्वात्मक पहल करना ही उनके लिए स्वाभाविक था। लेकिन सीपीआई ने ऐसा नहीं किया। नतीजतन, आजादी आन्दोलन में समझौतापरस्त राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग का आधिपत्य कायम हो गया और शानदार आजादी आन्दोलन के सारे फल उन्होंने ही हथिया लिए। आजादी के लिए खून बहाया, जान दी देश के आम लोगों ने। बिड़ला, टाटा या अम्बानी के परिवार से कोई इस संग्राम में नहीं था। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के नेतृत्व में दो धाराएं थी। एक थी गांधीजी के नेतृत्व में समझौतापरस्त सुधारवादी धारा जिसका पृष्ठपोषण राष्ट्रीय बुर्जुआ ने किया। दूसरी धारा थी सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में समझौताहीन क्रान्तिकारी धारा। अविभाजित सीपीआई के इन तथाकथित कम्युनिस्टों ने उस समय क्या कहा था? उन्होंने समझौतापरस्त सुधारवादी नेतृत्व का समर्थन करते हुए सुभाष बोस के समझौताहीन नेतृत्व का विरोध किया था। तत्कालीन राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रसिडेन्ट पद से सुभाष बोस को इस्तीफा देने पर मजबूर कर दिया गया था। उस समय सीपीआई नेतृत्व ने सुभाष बोस का साथ नहीं दिया था। बाद में सुभाष बोस ने देश में वामपंथियों को एकजुट करने की पहलकदमी की थी। देश में कम्युनिस्ट के तौर पर जाने जाने वाले नेताओं को अपनी पहलकदमी में शामिल होने का उन्होंने अनुरोध करते हुए कहा था कि यह वामपंथी एकजुटता अगर हो जाए तो यह भारत में साम्यवादी आन्दोलन के विकास में मदद करेगी। लेकिन सीपीआई के नेताओं ने उनका साथ नहीं दिया। उन्होंने स्टालिन के दिशा-निर्देश का बार-बार उल्लंघन किया। सुभाष बोस मार्क्सवादी नहीं थे। लेकिन उस समय के एक क्रान्तिकारी नेता होने के नाते मार्क्सवाद के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा थी। उन्होंने सोवियत क्रान्ति का स्वागत किया था। उन्होंने कहा था कि मैंने मार्क्स और लेनिन की किताबें पढ़कर समझा है कि कम्युनिस्ट देशप्रेमी होते हैं। लेकिन भारत के कम्युनिस्टों को देखकर नहीं लगता कि वे देशप्रेमी हैं। अत्यन्त व्यथा-वेदना के साथ ही उन्होंने यह बात कही थी। 1942 के 'अंग्रेजो, भारत छोड़ो आन्दोलन' में सीपीआई शामिल नहीं हुई और ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की मदद की। सीपीआई की इस गलत राजनीति की स्टालिन ने कड़ी आलोचना की थी। सुभाष बोस ने जब देश को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के चंगुल से मुक्त कराने के लिए रणकौशलगत लाइन लेकर जापान से एक तरह की संधि की थी, तब सीपीआई के नेताओं ने उनको 'कुसलिंग', जापान का एक दलाल कहा था। सीपीआई का इतिहास ही है लगातार मार्क्सवाद का उल्लंघन करते जाने का इतिहास। इसलिए, नकली मार्क्सवादियों के छद्म भेष में सीपीआई के नेताओं ने हर कदम पर मार्क्सवाद के साथ गद्दारी की है। आजादी के बाद राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग भारत की राजसत्ता पर काबिज हुआ, सीपीआई के लिए वे क्रान्तिकारी थे, क्रान्ति की मित्र शक्ति थे। भारत के राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग को वे अपने जनतान्त्रिक फ्रण्ट में शरीक होने वाला मानते रहे। लेकिन राजसत्ता पर आसीन राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग ने एकाधिकारी पूँजी, वित्तीय पूँजी को जन्म दे दिया है और बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ तैयार कर ली हैं। इस रास्ते राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग भारत के मजदूर वर्ग और मेहनतकश जनता के प्रधान दुश्मन में तब्दील हो चुका है, भारत आज एक साम्राज्यवादी ताकत है। मीडिया के शब्दों में उदीयमान सुपर पॉवर है। जबकि आज भी सीपीआई-सीपीआई(एम) उन्हें अपनी 'क्रान्ति के दोस्त' मानती हैं। मार्क्सवाद की बोली बोलते हुए मजदूर वर्ग के प्रति यह एक चरम विश्वासघात है। भारत आज जब वास्तव में पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति के स्तर में है तब सीपीआई(एम)-सीपीआई की साम्राज्यवाद-विरोधी सामन्तवाद-विरोधी जनतान्त्रिक क्रान्ति का सिद्धान्त वास्तव में मूल दुश्मन से जनता का ध्यान दूसरी तरफ हटा देने और पूँजीवाद-विरोधी क्रान्ति के रास्ते से हटाकर संसदीय मोहजाल में जनता को फंसाये रखने की धोखेभरी चाल के सिवाए और कुछ नहीं है। इसीलिए आजादी के बाद उन्होंने कहा था कि पण्डित नेहरू प्रगतिशील हैं, सरदार पटेल प्रतिक्रियावादी। फिर इसके बाद उन्होंने खोज लिया कि इन्दिरा प्रगतिशील है, मोरारजी देसाई प्रतिक्रियावादी। इस तरह शुरूआत से ही उन्होंने गलत राजनीति, सुविधावादी राजनीति पर अमल किया। सीपीआई(एम) के नेताओं ने कभी साम्प्रदायिकता के खिलाफ लड़ने की बात कहकर कांग्रेस का समर्थन किया, फिर कभी तानाशाही के खिलाफ लड़ने के नाम पर बीजेपी का समर्थन किया। कभी उन्होंने नारा दिया कि कांग्रेस और बीजेपी के विकल्प के तौर पर जयललिता, मायावती, मुलायम आदि को लेकर तीसरा मोर्चा गठित हो। असल में उनका एकमात्र लक्ष्य है येन-केन-प्रकारेण सत्ता में रहा जाए। वरना कम से कम इतना तो हो कि वे सत्ता के गलियारों में घूमते रह सकें। उनकी सारी राजनीति इसी लक्ष्य की ओर दिशा निर्देशित है।

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के बढ़ते कदमों को कोई रोक नहीं सकता

वर्तमान में गहरे संकट की घड़ी में कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा स्थापित हमारी पार्टी ही एकमात्र जनसंघर्ष और वर्ग संघर्ष गठित कर रही है। जन आन्दोलन गठित करते समय हमारा पहला लक्ष्य रहता है जनता पर होने वाले हर हमले को रोकना और आन्दोलन के दबाव से जनता के लिए कुछ राहत भी कम से कम हासिल करने की कोशिश करना। इस प्रक्रिया में कई आन्दोलनों में हम कुछ माँगें पूरी करवाने में सक्षम हुए हैं। महान नेता की सीख के अनुसार हमारा मूल लक्ष्य है जनता को शिक्षित करना, उनकी राजनैतिक चेतना को बढ़ाना, आन्दोलन के जरिए मूल दुश्मन की पहचान करवा देना। जनता को समझना होगा कि असली दुश्मन है पूँजीवादी राजसत्ता, अत्याचारी शासक बुर्जुआ वर्ग। राजसत्ता है शोषण-जुल्म चलाने के लिए बुर्जुआ वर्ग के हाथों में दमन का एक हथियार। चुनाव के जरिए एक पार्टी या गठबंधन की सरकार बदलती है। एक बुर्जुआ पार्टी की जगह दूसरी कोई बुर्जुआ पार्टी सत्ता में आ जाती है। लेकिन पूँजीवाद बरकरार रहता है। राजसत्ता भी बरकरार रहती है। इस राजसत्ता को क्रान्ति की चोट से उखाड़ फेंक देना है। साथ ही साथ सीपीआई(एम)-सीपीआई जैसी नकली मार्क्सवादी पार्टियों के असली चरित्र का पर्दाफाश करके जनता से उन्हें अलग-थलग कर देना है। आन्दोलन के समय हम इसी तरह जनता को शिक्षित और सचेत करने की कोशिश करते हैं। आन्दोलन है जनता की शिक्षा का केन्द्र। आन्दोलन उनमें बलिष्ठता बढ़ाता है। लड़ाई के तेज और चेतना में बढ़ोतरी करता है। दृष्टि को प्रसारित करता है। एक ही लक्ष्य से एकताबद्ध होने में मदद करता है। आन्दोलन है क्रान्तिकारी संग्राम का विद्यालय जिसमें शिक्षक है क्रान्तिकारी पार्टी जो उन्हें रास्ता दिखाती है। यह है हमारा लक्ष्य। इस स्पष्ट लक्ष्य के बिना आन्दोलन हो जाता है कुछ आर्थिक सहूलियतें-सुविधाएं पाने के लिए महज कुछ विक्षोभ। संक्षेप में कहें तो यह है बुर्जुआ अर्थवाद।

कॉमरेडो, मार्क्सवाद और वैज्ञानिक समाजवाद के खिलाफ सुनियोजित ढंग से प्रचार चलाया जा रहा है। पूँजीवादी-साम्राज्यवादी ताकतों की शह पाए हुए

(शेष पृष्ठ 6 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण

(पृष्ठ 5 का शेष)

संशोधनवादियों की साजिश के फलस्वरूप रूस और चीन में समाजवाद के हुए पतन के बाद दुनिया भर में बुर्जुआ वर्ग ने प्रचार छेड़ दिया था कि समाजवाद आने की अब कोई आशा नहीं है, लेकिन समाजवाद के पतन से हम हताश-निराश नहीं हुए। क्योंकि इस तरह की दुखदायी गड़बड़ होने की सम्भावना के बारे में नेताओं ने हमें तैयार कर दिया था। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्टॉलिन, माओ त्से-तुंग से लेकर कॉमरेड शिवदास घोष तक हरेक ने दिखाया था कि समाजवाद एक अन्त:वर्ती स्तर होता है, पूँजीवाद से साम्यवाद में उत्तरण का मध्यवर्ती स्तर होता है जिसका अर्थ है, हालाँकि समाज की अग्रगति स्वाभाविक तौर पर ही साम्यवाद की ओर जाएगी, लेकिन नेतृत्व अगर गलत हो या अध:पतित होकर प्रतिक्रान्ति सफल होने का रास्ता खोल दे, तो इस मध्यवर्ती स्तर में समाजवाद का पतन होकर पूँजीवाद फिर वापस लौट आ सकता है। अत: इस अंजाम से हम अनभिज्ञ नहीं थे। एकमात्र समाजवाद में सर्वहारा के अधिनायकत्व का सही प्रयोग ही पतन को रोक सकता है। हमें यकीन है कि हालात फिर बदलेंगे। इतिहास की मिसाल हमारे सामने है। धर्म एक समय समाज में एक आन्दोलन के रूप में आया था। धर्म प्रचारक अपने आपको ईश्वर का दूत होने का दावा करते थे। ईसाई धर्म, हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म सभी धर्मों के मामले में सच यही है। धर्म के आन्दोलन की जीत होने में सैकड़ों साल लगे थे। जीत-हार के एक लम्बे अर्से को पार कर उसके बाद जीत हुई थी। अनेक 'ईश्वर के दूतों' पर भी अत्याचार हुए थे, यहाँ तक कि वे मार भी डाले गए थे। 'ईश्वर की वाणी के प्रचारक' भी असल में इतिहास के गतिपथ को टाल नहीं पाए थे। नवजागरण से लेकर बुर्जुआ प्रजातंत्र कायम होने तक लगभग 350 साल तक लड़ाई लड़ते हुए पूँजीवाद की अन्तिम जीत हासिल हुई थी। पहले हार पर हार हुई थी। उसके बाद आखिकार जीत हासिल हुई थी। मानव सभ्यता के इतिहास में दास व्यवस्था से पूँजीवाद तक के दौर को अगर लिया जाए तो वह होगा हजारों हजार साल के वर्ग शोषण और वर्ग-शासन का इतिहास। उसकी तुलना में समाजवाद जिसने मानव इतिहास में शोषण को मिटाना चाहा था, उसकी उम्र थी सिर्फ 70 साल। सैकड़ों सालों से आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक क्षेत्र को घेरे हुए तरह-तरह के रूप में टिकी हुई एक शोषणमूलक व्यवस्था को जड़ से उखाड़ फेंक कर उसे आमूलचूल बदल डालने का काम आसान नहीं था, बहुत ही कष्टसाध्य काम था। वहाँ समाजवाद के लिए केवल 70 साल बहुत ही कम थे। अन्तिम जीत के लिए सर्वहारा के अधिनायकत्व में समाजवाद में लम्बे अर्से तक लड़ना होगा। आर्थिक, राजनैतिक, वैचारिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में जीवन-मरण का विरामहीन संघर्ष चलेगा। दृढ़ प्रतिज्ञा लेकर लड़ी जाने वाली उस निर्मम लड़ाई में भी पहले हार होगी, उसके बाद जीत आएगी। लेकिन 70 साल के समाजवाद ने इतिहास में यह बात साबित कर दी है कि यही है एकमात्र सभ्यता जो बेरोजगारी, गरीबी, भुखमरी, अकाल आदि समस्याओं का समाधान कर सकती है, मानव को शोषण से मुक्ति दिला सकती है। क्यों रोमाँ रोलाँ, बर्नाड शा, रवीन्द्रनाथ सरीखे महापुरुषों ने सोवियत समाजवाद का स्वागत किया था? वे कम्युनिस्ट नहीं थे, मार्क्सवादी नहीं थे, लेकिन वे सच्चाई को अस्वीकार करने की बात सोच भी नहीं सकते थे। सोवियत यूनियन में भ्रमण करने के बाद रवीन्द्रनाथ ने कहा था कि यह उनके जीवन का सर्वश्रेष्ठ तीर्थस्थान था। बर्नाड शा ने सोवियत यूनियन को जनतंत्र की एकमात्र पीठ के तौर पर देखा था। रोमाँ रोलाँ ने चेतावनी देते हुए कहा था कि रूस में समाजवाद अगर ढह गया, तो केवल रूस की जनता ही नहीं, पूरी दुनिया की जनता दासता की जंजीरों में बंध जाएगी। ब्रिटिश शक्ति के आगे सुभाष बोस जब अन्तत: परास्त हो गए, तो अन्तिम संदेश में उन्होंने कहा था कि मानव जाति के रक्षक के तौर पर स्टॉलिन अभी भी जिन्दा हैं। ये लोग कोई कम्युनिस्ट नहीं थे। लेकिन आज हम जिन सब बुद्धिजीवियों को चारों ओर देख रहे हैं, ऐसे नकली बुद्धिजीवी वे नहीं थे। समाजवाद ने एक नई सभ्यता की शुरूआत की थी। बुर्जुआ व्यवस्था के ताबेदार संसदीय जनतंत्र का गुणगान करते हैं। लेकिन पूँजीपति इसमें जनतंत्र का ढकोसला बनाये रख कर निर्मम ढंग से जनता का शोषण करते हैं। जनतंत्र का परचम लहराते हुए पूँजीवादी-साम्राज्यवादियों ने दो-दो विश्वयुद्ध छेड़े हैं। जनतंत्र का झण्डा हाथ में लेकर जर्मनी और इटली में फासीवाद कायम किया है। अमेरिकी साम्राज्यवाद और उसके पिट्ठुओं ने जनतंत्र कायम करने के नाम पर सार्वभौम स्वाधीन राष्ट्र इराक पर कब्जा कर लिया है। लाखों लाख निरीह नागरिकों की हत्याएं की हैं, उनके उद्योग, कृषि को तबाह कर दिया है। आज वे अफगानिस्तान को तबाह कर रहे हैं। लेकिन सोवियत यूनियन ने कभी किसी देश पर हमला नहीं किया। बल्कि महान लेनिन और स्टालिन के नेतृत्व में सोवियत यूनियन था शान्ति का गढ़, वह पूँजीवादी-साम्राज्यवादी युद्ध खेमे के खिलाफ शान्ति का खेमा था। देश-देश में राष्ट्रीय मुक्ति-संघर्षों और साम्राज्यवाद-विरोधी आजादी आन्दोलनों के विकास में सोवियत यूनियन ने मदद की थी। इस इतिहास को कोई नकार नहीं सकेगा।

कॉमरेडो, मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्टालिन, माओ त्से-तुंग, शिवदास घोष की चिन्तनधारा के क्रान्तिकारी आदर्श से संचालित होकर हमारी पार्टी दृढ़ संकल्प के साथ पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति सफल करने का लक्ष्य लेकर देश भर में वर्ग संघर्ष और जनआन्दोलन गठित कर रही है। हमारे इस देश ने बहुत सारे महापुरुष और मनीषी पैदा किए हैं–बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, कपिल, चार्वाक, कणाद और बहुत सारे। इन सबने अपने अपने समय में सभ्यता को आगे बढ़ाने के लिए भूमिका अदा की थी। भारतीय नवजागरण काल में इसी देश में राम मोहन, विद्यासागर, महात्मा फूले सरीखे बड़े-बड़े व्यक्तियों को पैदा किया था। इस देश ने आजादी आन्दोलन के काल में देशबन्धु, चित्तरंजन, लाला लाजपतराय, तिलक, नेताजी सुभाष और अन्य कई श्रद्धा के राजनैतिक नेताओं को जन्म दिया था। वहीं इसी देश ने पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति के दौर में सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष को पैदा किया था।

वे हमारे प्रियतम नेता, शिक्षक और पथ प्रदर्शक हैं। आज की दुनिया में उनका उज्ज्वल चिन्तन ही एकमात्र हमारे संघर्ष में सही रास्ता दिखा सकता है। संघर्ष को आगे बढ़ाते जाने में उनका नाम ही हमारी प्रेरणा है। मार्क्सवादी विज्ञान की उन्नति और समृद्धि में मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्टालिन, माओ त्से-तुंग बहुत बड़ा योगदान दे गए हैं। भारत की सरज़मीं पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद को सुनिश्चित ढंग से प्रयोग करने की प्रक्रिया में और सम-सामयिक अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में कॉमरेड शिवदास घोष ने मार्क्सीय विज्ञान की समझ को नए स्तर पर बुलन्द किया है। उन्होंने हमें सच्चा क्रान्तिकारी आदर्श, नीति-नैतिकता दी है। उनकी शिक्षाओं की मर्मवस्तु को हमें आत्मसात करना होगा। उन्नत नैतिक-सांस्कृतिक चरित्र का जो मान उन्होंने अपने जीवन में प्रतिफलित किया था, उसे हमें अपनाना होगा, जीवन में प्रयोग कर आगे बढ़ते जाना होगा। यही है हमारा लक्ष्य और उद्देश्य। हमारी पार्टी लगातार शक्ति संचित कर आगे बढ़ती जा रही है। हमारी अग्रगति को कोई रोक नहीं पाएगा। पार्टी की ताकत लगातार बढ़ेगी। दुनिया के विभिन्न देशों से ही अनेक क्रान्तिकारी हमारे साथ तालमेल कर रहे हैं। महान नेता की चिन्तनधारा से परिचित होने के लिए वे कॉमरेड शिवदास घोष की रचनावली और पार्टी के पत्र-पत्रिकाएं मांग रहे हैं। कॉमरेड शिवदास घोष की चिन्तनधारा की चर्चा और समझने की चेष्टा धीरे-धीरे एक आन्दोलन में तब्दील होती जा रही है, सिर्फ भारत में ही नहीं, सारी दुनिया में क्रान्तिकारियों में ही मुक्ति की चाह से आकुल मजदूर-किसान मार्क्सवाद-लेनिनवाद शिवदास घोष की चिन्तनधारा से अनुप्राणित हो रहे हैं।

अन्त में, आपके सामने मैं कॉमरेड शिवदास घोष के 1974 के एक भाषण के कुछ अंश पढ़कर सुनाऊँगा। तत्कालीन सामाजिक-राजनैतिक परिस्थितियों का विश्लेषण करते हुए उन्होंने कहा था, ''भारत की क्रान्ति दस्तक दे रही है। हमें समझना होगा कि इस समाज का किसी भी पहलू से कुछ भी काम का नहीं बचा है। शासक चाहे कुछ भी टोटकेबाजी करने की कोशिश करें पर इस समाज को और टिकाये नहीं रख पा रहे हैं। भारत का समाज क्रान्ति की मुक्ति-वेदना से छटपटा रहा है। केवल लोगों के संगठित सचेत राजनैतिक आन्दोलन का अभाव है और उतनी शक्ति सम्पन्न एक सही क्रान्तिकारी पार्टी का अभाव है जितनी न्यूनतम शक्ति होने से जनता में इन्कलाबी जज्बे और इन्कलाब के लिए परिपक्व इस अवस्था को संगठित दीर्घकालिक क्रान्तिकारी लड़ाई की ओर ले जाया जा सके। क्रान्ति के लिए वस्तुगत परिस्थिति की तमाम जमीन, 'इनग्रेडियेन्ट', गोलाबारूद, सब तैयार है। लोग बदलाव चाह रहे हैं। पुरानी शासन व्यवस्था की मिलिटरी के बल पर निर्भर करने के सिवाय शासकों के पास और कोई उपाय नहीं है। वे लोगों की अज्ञानता और राजनैतिक विभ्रान्तियों पर निर्भर कर रहे हैं-लेकिन यह कोई बहुत अहम बात नहीं है। हकीकत का इतना दबाव लोगों पर पड़ रहा है कि उस दबाव की वजह से भ्रामक दलीलें, धर्म के मोहजाल - इनमें से कोई भी लोगों को रोक नहीं पायेगा। एक बार अगर क्रान्ति की लहर उठनी शुरू हो गई तो किसी भी दलील से जनता को फिर आगे बढ़ने से रोका नहीं जा सकेगा। तब क्रान्ति के खिलाफ केवल एक ही हथियार बुर्जुआ के हाथों में रहेगा–वह है मिलिटरी, पुलिस, गोलाबारूद। लेकिन एक देश, एक राष्ट्र ने कमर सीधी कर अगर एक क्रान्तिकारी नेतृत्व के तहत सही क्रान्तिकारी लाइन के आधार पर लड़ाई शुरू कर दी तो क्या कभी सैन्य बल से इसे रोका जा सकेगा?'' यह बात तब भी सच थी, आज तो और भी ज्यादा प्रासंगिक है। उस समय उन्होंने हमें आह्वान करते हुए कहा था, '' जनता के पास जायें, उसे संगठित करें, उनकी राजनैतिक शक्ति का निर्माण करने में मदद करें जिससे कि मेहनतकश लोग एक दिन खुद हथियार उठा सकें और बुर्जुआ वर्ग को सत्ता से हटा कर पूँजीवाद को उखाड़ फेंक कर समाजवाद कायम करने के जरिये समाज का आमूलचूल बदलाव ला सकें।'' उनका यह आह्वान हमारे हृदय में सदा जीवन्त रहे और हमें रास्ता दिखाये–यही बात कह कर ही मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

विश्व सर्वहारा वर्ग के महान नेता कार्ल मार्क्स लाल सलाम!
प्रिय नेता और शिक्षक कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम!
एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) जिन्दाबाद!
सर्वहारा क्रान्ति जिन्दाबाद!
अन्तर्राष्ट्रीयतावाद का झण्डा लेकर आगे बढ़ें!
सबको लाल सलाम!

केन्द्रीय कमेटी ने कोयला घोटाले का विरोध किया

एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने कोयला घोटाले का तीव्र प्रतिवाद करते हुए 22 मार्च को निम्नलिखित बयान जारी किया:

हाल ही में प्रकाशित सी.ए.जी. (कैग) रिर्पोट में कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार का घोर भ्रष्टाचार से ग्रस्त चेहरा और भी उजागर हुआ है। कई सरकारी संस्थाओं सहित सौ से अधिक गैर-सरकारी एकाधिकारी कम्पनियों को जिनमें टाटा-अम्बानी भी हैं, 155 कोयला खदानें किसी प्रकार की खुली निलामी न करके दे दी गई है। इसके जरिए उनके हाथों में अन्यायपूर्ण तरीके से लगभग 10.67 लाख करोड़ रुपए का ज्यादा मुनाफा थमा दिया गया है और यह किया गया है तमाम प्रचलित कानूनों को धता बता कर। इसकी वजह से लोगों को झांसा देकर बड़े पूँजीपतियों को सुविधा प्रदान करने के लिए यही सरकार की कार्यपद्धति बन गई है। यह घटना साफ तौर से दिखा रही है कि कांग्रेस-भाजपा से शुरू कर सभी शासक पार्टियों का काम हो गया है, बड़े पूँजीपतियों के लिए भारी लूट और सम्पदा का पहाड़ खड़ा करने का मार्ग सुगम बना देना, बदले में उन्हें भी लूट के माल में हिस्सा मिल रहा है। हम जनता के धन की इस भारी पैमाने की लूट करने वालों को गिरफ्तार करने और उदाहरणमूलक सजा देने की मांग करते हैं।

बिजली दर वृद्धि के खिलाफ 31 मार्च को मुज़फ्फरपुर में एसयूसीआई(सी) द्वारा रोष प्रदर्शन

स्कूल पाठ्यक्रम से मार्क्स-लेनिन को हटाने की कुचेष्टा का एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) ने किया कड़ा विरोध

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 7 अप्रैल को जारी एक बयान में कहा कि स्कूल स्तर पर पाठ्यक्रम का पुनरुद्धार करने के नाम पर इतिहास के सिलेबस से महान मार्क्स, एंगेल्स और बॉलशेविक क्रान्ति से संबंधित अंश को हटाने के तृणमूल कांग्रेस-नीत पश्चिम बंगाल सरकार के प्रस्तावित कदम की हम कड़ी निन्दा करते हैं। विज्ञान की विभिन्न शाखाओं ने वस्तुजगत के जिन विशेष सत्यों का पता लगाया, उन्हें विज्ञानसम्मत ढंग से परस्पर संबंधित, संयोजित व सामान्यीकृत करके द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दर्शन की युगांतकारी खोज के कारण कार्ल मार्क्स इतिहास में एक बेजोड़ स्थान रखते हैं। इसलिए द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद कोई मनगढ़ंत भाववादी प्रस्थापना नहीं है बल्कि यह सभी विज्ञानों का विज्ञान है।

परिक्षित-निरीक्षित सत्यों पर आधारित सुसंयोजित विज्ञानसम्मत विश्व दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए उन्होंने द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विज्ञान को इतिहास के विश्लेषण के काम में प्रयोग किया और ऐतिहासिक वस्तुवाद को जन्म दिया जो मानव समाज के प्रति उनका और एक विस्मयकारी योगदान है। इसके माध्यम से उन्होंने ही पहली बार दुनिया को बदलने के इतिहास द्वारा निर्धारित रास्ते से लोगों को अवगत कराया था और मानव द्वारा मानव के शोषण से मुक्ति का रास्ता दिखाया था। इसलिए, हमारा दृढ़ मत है कि स्कूल के पाठ्यक्रम से कार्ल मार्क्स और मार्क्सवाद को तिलांजलि देने का पश्चिम बंगाल सरकार का प्रस्तावित कदम ज्ञानार्जन और असली शिक्षा पर ही एक हमला है। साथ ही यह इतिहास को विकृत करने की एक कुचेष्टा है।

जाहिर है कि यह प्रस्तावित कार्रवाई शासक पूँजीपति वर्ग के स्वार्थ में ही करने की सोची गई है जिसे कार्यान्वित करने से समाज में प्रतिक्रियावादी चिन्तन की बाढ़ आ जाएगी। तृणमूल कांग्रेस-नीत सरकार की यह योजना पूरी तरह अस्वीकार्य है और इसका पुरजोर विरोध करने की जरूरत है। समाज के हर तबके के सुबुद्धिसम्पन्न लोगों, खासकर शिक्षकों, वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, छात्र-छात्राओं सहित बुद्धिजीवियों से हमारा अनुरोध है कि इस बदनीयत से लागू किए जा रहे कदम के विरोध में वे आगे आएं और पश्चिम बंगाल की तृणमूल कांग्रेस-नीत सरकार के इस घिनौने मनसूबे को परास्त करें।

अन्तिम यात्रा

(पृष्ठ 2 का शेष)

कद्रदान और जाने माने लोग। श्रद्धांजलि देने आये थे विभिन्न वामपंथी पार्टियों के नेतागण। दोपहर ठीक डेढ़ बजे शव को लेकर नेतागण पार्टी कार्यालन पहुँचे तो गमगीन हो गया सारे कार्यालय का प्राँगण। रूँधे हुए गले से नारा गूँज उठा–आजीवन क्रान्तिकारी कॉमरेड कल्याण चौधरी लाल सलाम, सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम।

शव को कार्यालय की दूसरी मंजिल पर स्थित हाल कमरे में शायित रखा गया। माल्यार्पण करके क्रान्तिकारी श्रद्धांजलि अर्पित की डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के पूर्व वीसी जाने माने वैज्ञानिक डा. कुलेन्दू पाठक ने, नेलू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एच श्रीकान्त ने, कानूनविद लीना बरूआ, सामाजिक कार्यकर्ता शरदेन्दू विश्वास, अध्यापिका वाहिदा बेगम, कानूनविद जितेन दास, मुकुल साहा और कॉमरेड चौधरी के आत्मीय परिजन। सीपीआई(एमएल) की तरफ से कॉमरेड नरेन बरा, सीपीआई की तरफ से कॉमरेड डम्बरू बरा ने कॉमरेड कल्याण चौधरी के पार्थिव शरीर पर माल्यार्पण करके श्रद्धांजलि अर्पित की। खबर मिलते ही दौड़े चले आये उम्र के बोझ से झुकी हुई कमर वाले परम शुभचिन्तक श्री अमूल्य भट्टाचार्य। सजल नेत्रों से अस्वस्थ शरीर होते हुए भी आ पहुँचे थे एक और बुजुर्ग कॉमरेड, पार्टी की पूर्व राज्य कमेटी के सदस्य, पूर्व विधायक नजमुल हक।

उसके बाद पार्टी की आसाम राज्य कमेटी, विभिन्न जिला कमेटियों व जिला इकाइयों की तरफ से श्रद्धांजलि दी गई। जनसंगठन एआईयूटीयूसी, एमएसएस, डीवाईओ, एआईडीएसओ, केकेएमएस, किशोर कम्युनिस्ट वाहिनी कॉमसोमोल, एमएससी, राज्य कमेटी के मुखपत्र जनमुक्ति, जनमुक्ति प्रिंटर्स की तरफ से भी माल्यार्पण करके श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सबसे अन्त में पार्टी के पोलित ब्यूरो सदस्य कॉमरेड असित भट्टाचार्य ने कॉमरेड कल्याण चौधरी के शव पर माल्यार्पण करके श्रद्धांजलि अर्पित की।

अन्त में माल्यार्पण करके श्रद्धांजलि देते हुए कॉ. असित भट्टाचार्य

सांयकाल साढ़े चार बजे शुरू हुई नवग्रह श्मशान की तरफ अन्तिम यात्रा–मौन जुलूस। जुलूस के आगे दिवंगत नेता के 69 साल के जीवनकाल की यादगार के तौर पर 69 आधे झुके हुए लाल झण्डे लेकर चल रहे थे 69 कॉमसोमोल स्वयंसेवक। वेलूबारी चारीआली मौड़ से बी बरूआ रोड़ होते हुए आगे बढ़ता गया जुलूस। सड़क के दोनों तरफ जमघट लगाये खड़े लोग इस शोकसंतप्त जन प्रवाह को देख रहे थे। ऐसा अनुशासन, शोकसंतप्त लेकिन दृढ़ संकल्पित जुलस गुवाहाटी के लोगों ने इससे पहले कभी नही देखा था। श्मशान में भी बहुत लोग इन्तजार कर रहे थे। प्रोफेसर सुशील बरठाकुर ने माल्यार्पण करके श्रद्धांजलि अर्पित की। कॉमरेड कल्याण चौधरी के अन्तिम दर्शन करने के लिए प्रख्यात मेडिसिन विशेषज्ञ डा. साधन दास भी आ पहुँचे थे।

शाम को साढ़े 5 बजे गये थे। आकाश में धीरे-धीरे अन्धेरा घिरने लगा था। छिपते हुए सूरज की लाल आभा तब भी जरा जरा सी दिखाई दे रही थी। कुछ देर बाद ही खत्म हो जाएगा आसाम के क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास का एक अध्याय। श्मशान की भट्ठी के सामने शव को लिटा रखा था। चारों तरफ रूदन मचा हुआ था। राज्य कमेटी के सदस्य दिवंगत कॉमरेड के शव के चारों तरफ खड़े थे। चारों ओर से मुखर हो उठा–आजीवन क्रान्तिकारी कॉमरेड कल्याण चौधरी लाल सलाम, कॉमरेड कल्याण चौधरी अमर रहें, मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष की चिन्तनधारा जिन्दाबाद।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly Date of Printing : 21 April, 2012

संसद में डॉ. तरुण मण्डल

केन्द्रीय बजट आम आदमी के जीवन में मुसीबतें लाएगा

एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) सांसद डॉ. तरुण मण्डल ने 2012-13 वर्ष के केन्द्रीय बजट पर संसद में हो रही चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि यह केन्द्रीय बजट एक तरफ जनविरोधी है तो दूसरी तरफ इसे अमीरों एवं पूँजीपतियों को संतुष्ट करने के उद्देश्य से पेश किया गया है। इसके माध्यम से देश के दुर्दशाग्रस्त, गरीब, असहाय आम आदमी के जीवन में और भी बदहाली पैदा होगी। यह बजट हर लिहाज से अमीरों के स्वार्थ में, अमीरों के लिए, अमीरों के द्वारा तैयार किया गया है। उन्होंने कहा, यह बजट आम आदमी के लिए अत्यंत कठोर लेकिन उद्योगपति और कॉरपोरेट सैक्टर के लिए अत्यन्त नर्म है।

उन्होंने कहा, यह अजीब बात है कि गरीब आम आदमी के लिए कुछ कल्याणकारी व्यवस्था या कोई भी राहत देने वाला कदम उठाने से ही उसे 'लोकलुभावनी' या सस्ती लोकप्रियता कहा जाता है। दूसरी तरफ अंधाधुध प्रत्यक्ष कर वृद्धि, परिसेवा करों का दायरा व परिमाण बढ़ाने, ईंधन के दाम बार-बार बढ़ाने, गरीब लोगों के लिए सभी प्रकार के अनुदानों को समाप्त कर देने जैसे जनविरोधी कदमों को 'विकास' एवं 'वृद्धि' की तरफ साहसी कदम की संज्ञा दी जाती है। उन्होंने वित्तमंत्री को याद दिलाते हुए कहा, पिछले साल बजट पेश करते हुए उन्होंने कहा था कि विश्व आर्थिक मंदी के धक्के को सहने की क्षमता और उसका उपयुक्त रक्षा कवच भारतीय अर्थव्यवस्था के पास है। फिर भी यह बजट पेश करते हुए वित्तमंत्री कह रहे हैं कि हमारे देश की अर्थव्यवस्था विश्व आर्थिक मंदी के धक्के से डगमगा रही है। यह बात उन्हें क्यों कहनी पड़ रही है? वे जिस बात को छिपाने की चेष्टा कर रहे हैं वह है कि हमारे देश की तरह ही अमेरिका, यूरोप, चीन सहित दुनिया में सब जगह जो भी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के मॉडल का अनुसरण कर रहे हैं वे ही सर्वग्रासी संकट में डूबते जा रहे हैं। बेरोजगारी, छंटनी, रोजगार के अवसरों में कमी, मजदूरी में कटौती हर रोज बढ़ रही है। इसकी वजह से लोगों की खरीद शक्ति तेजी से घट रही है और बाजार संकट बढ़ रहा है। अधिकतम मुनाफे की लालसा रखने वाली पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के पास इससे छुटकारा पाने का कोई उपाय नहीं है।

संकट से छुटकारा पाने में सरकार के असफल प्रयास को दिखाते हुए डॉ. मण्डल ने कहा, वित्तमंत्री बैंक की ब्याज दर बढ़ा कर मुद्रास्फिति पर लगाम लगाने की बात कह रहे हैं। लेकिन इसके परिणाम स्वरूप बैंक से कर्ज लेने की मात्रा घटेगी, बाजार में सामान खरीदने की मांग भी घटेगी। दूसरी तरफ ब्याज की दर कम करने से बाजार में नकद रुपए की आमद बढ़ेगी। जिसकी वजह से मुद्रास्फिति फिर नए सिरे से बढ़ेगी। इस दोहरे संकट से पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए कोई भी टोटकेबाजी काम नहीं करेगी। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था एक संकट से बचने के प्रयास में अन्य एक और गहरे संकट में धंसती जा रही है।

जनविरोधी बजट के खिलाफ मुज़फ्फरपुर में विरोध प्रदर्शन

उन्होंने वित्तमंत्री से सवाल किया–अर्थव्यवस्था में यह संकट पैदा करने के लिए क्या निहायत गरीब, कंगाल, सर्वहारा लोग जिम्मेदार हैं? ऐसा यदि नहीं है तो क्यों उन पर इस संकट का तमाम बोझ लादा जा रहा है? गरीब लोगों पर टैक्स का भार लादा जाएगा, जबकि बेईमान धनी लोग बेखौफ टैक्स चोरी करके, बैंक का कर्ज हड़प कर, भविष्य निधि का पैसा हड़प कर अथवा उनके व्यापार की क्षतिपूर्ति करने की झूठी दलील देकर करोड़ों-करोड़ रुपए सरकारी खजाने से सहायता के रूप में लूट कर मालामाल हो रहे हैं। देश की जनसंख्या के केवल 7 से 8 प्रतिशत लोगों के लिए व्यक्तिगत कर में 4 हजार करोड़ रुपए की लोग दिखावटी छूट देकर देश के अधिकांश लोगों के कंधों पर 41 हजार करोड़ रुपए के परोक्ष कर का बोझ थोप दिया गया है। इसकी वजह से इसी बीच रोजमर्रा के इस्तेमाल की चीजों के आकाश छूते दाम और भी बढ़ेंगे।

डॉ. तरुण मण्डल ने भविष्यनिधि पर ब्याज दर कम करने के फैसले का भी तीव्र विरोध करते हुए कहा, इसकी वजह से छोटे और मझोले व्यापार से सम्बद्ध असंख्य लोगों और किसानों का जीवन तहस-नहस हो जाएगा। इसके साथ-साथ पूँजी की सट्टेबाजी के बाजार में विदेशी पूँजी का भारी मात्रा में निवेश भारी संकट पैदा कर रहा है।

शिक्षा और स्वास्थ्य में सरासर बजट आपूर्ति कम करके निजीकरण के रास्ते सरकारी-गैरसरकारी संयुक्त सहभागिता (पी.पी.पी.) की बात कही जा रही है। डॉ. तरुण मण्डल ने इसका तीव्र प्रतिवाद किया। उन्होंने कहा, इसकी वजह से आम आदमी के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं उसकी पहुँच से बाहर हो जाएंगी। इससे शिक्षा और स्वास्थ्य को लेकर व्यापार ही बढ़ेगा। सरकारी संस्थानों में विनिवेशीकरण का विरोध करते हुए उन्होंने कहा, सरकारी ओद्यौगिक संस्थान आजाद भारत में, जनता के आन्दोलन के दबाव में, लोगों के टैक्सों के पैसों से निर्मित हुए थे। इनको मनमाने ढंग से सरकार निजी मालिकों के हाथों में नहीं सौंप सकती है। उन्होंने आगे कहा, मंत्रियों, राजनीतिज्ञों, अफसरशाहों और कॉरपोरेट घरानों की अनिष्टकारी मिलीभगत से करोड़ों रुपया भ्रष्टाचार के माध्यम से हड़पा जा रहा है। जबकि कर्जजाल में फंसे महाराष्ट्र, कर्नाटक, पश्चिम बंग एवं अन्यान्य राज्यों के किसान आत्महत्याएं कर रहे हैं।

विदेशों में शोधित करके पेट्रो पदार्थों की बिक्री कर रही सब बड़ी निजी कम्पनियों पर टैक्स लगा कर राजस्व वृद्धि करने की मांग उन्होंने की। सरकार तेल कम्पनियों की 'अन्डर रिकवरी' को उनके नुकसान के रूप में दिखाकर लोगों को जिस प्रकार धोखा दे रही है उसे तुरन्त बन्द करने की मांग भी उन्होंने उठाई।

ईजीएस अध्यापकों पर बर्बर पुलिस अत्याचारों के खिलाफ 29 मार्च को भुवनेश्वर में रोष प्रदर्शन करती हुई अखिल भारतीय महिला सांस्कृतिक संगठन की कार्यकर्ता

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग. नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष: 011-25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com